TMIMT International Journal
ISSN: 2348-988X
Volume No. 12, Issue No. 1, January – June, Year: 2025
https://tmimtinternationaljournal.com

जैन तीर्थों के विकास में स्वामी रवीन्द्रकीर्ति जी का योगदान

दीप चन्द जैन
शोधार्थी
जैन अध्ययन केन्द्र
तीर्थंकर महावीर विश्वविद्यालय, मुरादाबाद

एम० पी० जैन
एमेरिटस प्रोफेसर
जैन अध्ययन केन्द्र
तीर्थंकर महावीर विश्वविद्यालय, मुरादाबाद

शोध-पत्र

तीर्थ शब्द 'तृ' धातु तथा 'थ' प्रत्यय से मिलकर बनता है जिसका अर्थ है जिसके द्वारा तरा जाये। इस भावार्थ को मानने से तीर्थ शब्द के कई अर्थ हो जाते हैं जैसे शास्त्र, उपाध्याय, पुण्यकर्म तथा पवित्र स्थान आदि परन्तु लोक व्यवहार में इस शब्द का सर्व प्रचलित आशय पवित्र स्थान से होता है। जैन परम्परा में जिन स्थानों को पूज्य माना जाता है, वे जैन तीर्थ कहलाते हैं। जैन धर्म में तीर्थ क्षेत्रों के कई प्रकार बताये गए हैं जैसे- सिद्धक्षेत्र, अतिशय क्षेत्र व कल्याणक क्षेत्र।

समूचे भारतवर्ष में प्रायः खुदाई में जिन प्रतिमाएं प्राप्त होती रहती हैं जिससे सहज ही यह अनुमान लगाया जा सकता है कि जैन तीर्थों का क्षेत्र कितना व्यापक एवं गौरवशाली रहा है। इन तीर्थों के संरक्षण एवं विकास हेतु अनेक आचार्यों एवं श्रावक श्रेष्ठियों ने समय- समय पर अपना योगदान दिया है। इसी श्रृंखला में वर्तमान परिप्रेक्ष्य में कर्मयोगी पीठाधीश स्वस्तिश्री रवीन्द्रकीर्ति स्वामी जी का नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय है।

जैन समाज की सर्वोच्च साध्वी गणिनी प्रमुख आर्यिका शिरोमणि श्री ज्ञानमती माताजी के परम शिष्य पीठाधीश रवीन्द्रकीर्ति स्वामी जी का जन्म सन 1950 में जिला बाराबंकी (उत्तर प्रदेश) के टिकैत नगर कस्बे में हुआ था। आपकी माता मोहिनी देवी एवं पिता श्रीमान छोटे लाल जैन जी अपने क्षेत्र के गणमान्य श्रेष्ठी थे। आर्यिका श्री ज्ञानमती माताजी की प्रेरणा से कम उम्र में ही आपके मन में वैराग्य के बीज अंकुरित हो गए थे। आपने अपनी समस्त शिक्षा, व्यापार और परिवार का मोह छोड़कर अप्रैल सन 1972 में नागौर (राजस्थान) में आचार्य श्री धर्मसागर

जी महाराज से गृहत्याग तथा आजीवन ब्रम्हचर्य का नियम लेकर संयम के पथ पर अपना कदम बढ़ाया। तत्पश्चात सन 2011 में मगसिर कृष्णा दशमी के दिन परम पूज्य आर्यिका श्री ज्ञानमती माताजी एवं सकल समाज के द्वारा हर्ष एवं गौरव के साथ आपको जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर की धर्मपीठ पर 'पीठाधीश' के रूप में अभिषिक्त किया गया।

जैन तीर्थों के संरक्षण एवं विकास के लिए पूज्य आर्यिका श्री ज्ञानमती माताजी सदा प्रयत्नशील रहती हैं। उनकी प्रेरणा एवं मार्गदर्शन में रवीन्द्रकीर्ति स्वामी जी ने तीर्थंकर भगवन्तों की जन्मभूमियों सहित अनेक जैन तीर्थों के संरक्षण एवं संवर्धन का कार्य किया है जिसका संक्षेप में वर्णन निम्नलिखित प्रकार से है-

अयोध्या- जैन परम्परा में अयोध्या को तीर्थंकरों की शाश्वत जन्मभूमि स्वीकार किया गया है जिसकी रचना इन्द्रों के द्वारा की गयी थी। वर्तमान कल्पकाल में चौबीस में से पाँच तीर्थंकरों (श्री आदिनाथ जी, अजितनाथ जी, अभिनन्दननाथ जी, सुमतिनाथ जी तथा अनन्तनाथ जी) का जन्म यहाँ पर हुआ है। त्रेषठ शलाका पुरुषों में से आठवें बलभद्र श्री रामचन्द्र जी का जन्म भी अयोध्या में होना स्वीकार किया जाता है। यही वह भूमि है जहाँ से तीर्थंकर ऋषभदेव ने प्रजा को असि, मसि, कृषि, वाणिज्य, विद्या और शिल्प आदि षट कर्मों का उपदेश देकर कर्मभूमि का प्रारम्भ किया था तथा उन्हीं के पुत्र चक्रवर्ती भरत के नाम पर इस देश का नाम भारतवर्ष पड़ा। स्वामी जी के द्वारा यहाँ पर 13 फरवरी से 24 फ़रवरी सन 1994 तक भगवान ऋषभदेव महामस्तिकाभिषेक महोत्सव का राष्ट्रीय स्तरीय आयोजन बड़ी धूमधाम के साथ संपन्न हुआ। पुनः रायगंज स्थित प्रांगण में सन 1994 में तीन चौबीसी जिन मंदिर एवं सन 1995 में समवसरण जिन मंदिर का निर्माण व भव्य पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव स्वामी जी के नेतृत्व में संपन्न हुआ। क्षेत्र के महत्त्व को समझते हुए स्वामी रवीन्द्रकीर्ति जी ने यहाँ पर पाँचों तीर्थंकर भगवन्तों की जन्मस्थली पर सुन्दर जिनालयों का निर्माण कराया है। वर्तमान में यहाँ पर तीस चौबीसी जिन मंदिर, भगवान भरत जिनमंदिर तथा 84 फुट उत्तुंग तीन लोक रचना आदि का निर्माण तीव्र गति से चल रहा है।

हस्तिनापुर- भगवान शान्तिनाथ, कुंथुनाथ, अरहनाथ के गर्भ, जन्म, तप तथा केवलज्ञान कल्याणकों से सुशोभित इस पावन तीर्थ का अपना गौरवशाली इतिहास है। भगवान ऋषभदेव को राजा श्रेयांस द्वारा इक्षुरस का प्रथम आहार यहीं पर दिया गया था तथा तभी से दान तीर्थ की परम्परा का प्रारम्भ हुआ। कौरव तथा पांडवों के मध्य महाभारत की घटना भी यहीं से जुडी हुई है।

हस्तिनापुर में 'श्री दिगम्बर जैन प्राचीन बड़ा मंदिर' से थोड़ी दूरी पर स्थित है जैन भूगोल की अद्‌वितीय रचना 'जम्बूद्‌वीप', जिसे उत्तर प्रदेश के पर्यटन विभाग ने 'मानव निर्मित स्वर्ग' की संज्ञा प्रदान की है। इसे निर्मित करने का श्रेय जाता है पीठाधीश रवीन्द्रकीर्ति स्वामी जी को जिन्होंने गणिनी आर्यिका श्री ज्ञानमती माताजी की मंगल प्रेरणा व प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चंदनामति माताजी के निर्देशन में वर्षों के अथक प्रयासों से इस स्वर्ग को धरती पर उतारा है। स्वामी जी ने जम्बूद्‌वीप के विशाल परिसर में अनेक सुन्दर मंदिरों का निर्माण कराया है। इनमें सर्वप्रथम कमल की आकृति का मंदिर बनवाकर उसमें भगवान महावीर स्वामी की अवगाहना प्रमाण (7 हाथ की) प्रतिमा सन 1975 में प्रतिष्ठित कराई। जम्बूद्‌वीप के मध्य भाग में 101 फुट ऊंचा सुमेरु पर्वत बना है साथ ही तीन मूर्ति मंदिर (1985), ध्यान मंदिर (1995), तेरहद्‌वीप जिनालय (2007), नवग्रह शान्ति जिन मंदिर (2008), तीन लोक की रचना (2010), समवसरण मंदिर (2010) एवं 1000 दर्शकों की बैठक क्षमता से युक्त आचार्य शान्ति सागर प्रवचन हाल (2009) निर्मित हुआ। यहाँ पर एक विशाल पुस्तकालय भी है जिसमें लगभग 20,000 पुस्तकें अध्ययन के लिए उपलब्ध हैं। बालक, वृद्‌ध सभी की रूचि का ध्यान रखते हुए संस्थान द्‌वारा इस परिसर के अन्दर हस्तिनापुर के प्राचीन इतिहास से सम्बंधित झांकियां, चित्र प्रदर्शनी, हंसी के फव्वारे, जम्बूद्‌वीप रेल, झूले तथा मनोरंजन के अनेक साधन उपलब्ध कराये गए हैं। सम्प्रति पीठाधीश श्री रवीन्द्रकीर्ति जी के प्रयत्नों से जम्बूद्‌वीप हस्तिनापुर विकास एवं जैन धर्म के अध्ययन का एक प्रमुख केन्द्र बन गया है।

मांगीतुंगी- मांगीतुंगी महाराष्ट्र प्रान्त के नासिक जिले में सह्याद्रि पर्वतमाला से सम्बंधित दो जुड़वाँ पहाड़ी हैं। दोनों पर्वत चोटियों पर कई गुफाएं हैं जिनमें अति प्राचीन जिनालय एवं शिलालेख मिलते हैं। मांगीतुंगी एक महत्त्वपूर्ण पौराणिक स्थल है। तीर्थंकर मुनिसुव्रतनाथ के तीर्थ काल में उत्पन्न एवं पद्‌मपुराण में वर्णित राम, हनुमान, सुग्रीव, नल, नील, महानील आदि 99 करोड़ मुनि यहीं से मोक्ष गए हैं। जैन मान्यता के अनुसार नारायण श्री कृष्ण का अंतिम संस्कार उनके बड़े भाई बलराम जी ने यहीं पर किया था एवं तदनन्तर संन्यास लेकर यहीं पर तप किया था। इसके महत्त्व को देखते हुए इसे दक्षिण भारत का सम्मेद शिखर भी कहा जाता है।

मांगीतुंगी में स्वामी रवीन्द्रकीर्ति जी द्‌वारा भगवान ऋषभदेव की अखंड पाषाण से निर्मित 108 फुट ऊँची विशाल प्रतिमा का निर्माण कराया गया एवं इसका भव्य पंचकल्याणक महोत्सव सन 2016 में पूज्य आर्यिका श्री ज्ञानमती माताजी के सानिध्य में संपन्न हुआ। अंतर्राष्ट्रीय स्तर के इस महोत्सव में देश-विदेश के लाखों श्रृद्‌धालुओं ने बढ़ चढ़कर हिस्सा लिया। इस प्रतिमा को गिनीज़ बुक ऑफ़ वर्ल्ड रिकॉर्ड में भी दर्ज किया गया है।

प्रयाग- आज से करोड़ों वर्ष पूर्व जैन धर्म के प्रथम तीर्थंकर भगवान ऋषभदेव का जन्म अयोध्या में हुआ था। राज्य संचालन करते हुए लाखों वर्ष बीत जाने पर एक बार भगवान को वैराग्य हो गया तब उन्होंने सिद्धार्थ नामक वन में जाकर वटवृक्ष के नीचे जैनेश्वरी दीक्षा धारण की थी। वही स्थान आज संसार में प्रयाग तीर्थ के नाम से प्रसिद्धि को प्राप्त है। प्रयाग का जो प्राचीन इतिहास लुप्तप्राय हो गया था वह इतिहास स्वामी रवीन्द्रकीर्ति जी द्वारा इस क्षेत्र पर 'तीर्थंकर ऋषभदेव तपस्थली प्रयाग दिगम्बर जैन तीर्थ' के रूप में निर्मित करके पुनः जीवंत कर दिया गया है। भगवान ऋषभदेव की दीक्षास्थली पर कैलाश पर्वत की प्रतिकृति का निर्माण होने से लाखों श्रृद्धालु यहाँ प्रतिवर्ष दर्शनार्थ आते रहते हैं।

भरत ज्ञानस्थली (दिल्ली)- भगवान ऋषभदेव के ज्येष्ठ पुत्र चक्रवर्ती भरत के नाम पर ही इस देश का नाम भारतवर्ष पड़ा था तथा सम्राट भरत ने अपने पिता के समान ही जैनेश्वरी दीक्षा धारण करके मोक्ष को प्राप्त किया था। उन्हीं भगवान भरत की 31 फुट उत्तुंग प्रतिमा दिल्ली के सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण स्थान कनाट प्लेस पर स्थापित कराकर स्वामी रवीन्द्रकीर्ति जी जैन धर्म की महती प्रभावना कर रहे हैं।

आर्यिका श्री ज्ञानमती माताजी की दीक्षास्थली मधोराजपुरा (राजस्थान) में सम्मेद शिखर पर्वत की प्रतिकृति बनाकर उसपर भगवान पार्श्वनाथ की 15 फुट ऊँची अत्यंत सुन्दर प्रतिमा स्थापित कराकर उसे तीर्थ के रूप में विकसित करने का श्रेय स्वामी रवीन्द्रकीर्ति जी को ही जाता है। महाराष्ट्र के शिरडी में ज्ञानतीर्थ के रूप में भव्य कमल मंदिर का निर्माण स्वामी जी द्वारा कराया गया है। शाश्वत निर्वाण भूमि (झारखण्ड) में आचार्य शान्तिसागर धाम विकसित करके स्वामी जी ने उसमें भगवान अजितनाथ की 31 फुट उत्तुंग प्रतिमा स्थापित करायी है। इसके अतिरिक्त श्रावस्ती, कौशाम्बी, सारनाथ (वाराणसी), काकन्दी, रत्नपुरी, भद्दिलपुर, मिथिलापुरी, राजगृही, कुण्डलपुर आदि अनेक तीर्थों पर जीर्णोद्धार एवं नवीन निर्माण स्वामी जी द्वारा कराये गए हैं जिनसे ये तीर्थ उन्नति को प्राप्त हो रहे हैं एवं वर्तमान युवा पीढी के लिए प्रेरणास्वरुप हैं।

संक्षेप में यदि हम देखें तो यह पाते हैं कि गणिनी आर्यिका श्री ज्ञानमती माताजी के सुयोग्य शिष्य एवं जम्बूद्वीप धर्मपीठ के पीठाधीश पद पर अलंकृत स्वस्ति श्री रवीन्द्रकीर्ति स्वामी जी न केवल उत्कृष्ट श्रावक की चर्या का पालन कर रहे हैं अपितु तीर्थंकर भगवन्तों की जन्मभूमियों सहित अनेक जैन तीर्थों के संरक्षण एवं संवर्धन में अपना महत्त्वपूर्ण योगदान दे रहे

हैं। आपकी कार्यकुशलता को देखते हुए 'तीर्थंकर महावीर विश्वविद्यालय' मुरादाबाद द्वारा सन 2016 में आपको 'मैनेजमेंट गुरु' की उपाधि से समानित किया गया।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

- जैन डॉ0 पन्नालाल, (2012), आचार्य जिनसेन विरचित आदिपुराण, भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली
- जैन डॉ0 पन्नालाल, (2000), आचार्य जिनसेन विरचित हरिवंशपुराण, भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली
- जैन डॉ0 पन्नालाल, (2000), आचार्य रविशेण विरचित पद्मपुराण, भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली
- जैन डॉ0 जीवन प्रकाश, (2012), गौरविका, दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान, हस्तिनापुर, मेरठ
- जैन डॉ0 अनुपम, (2018), सर्वोच्च दिगम्बर जैन प्रतिमा, दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान, हस्तिनापुर, मेरठ